

लुमयैः N. 24, 25. किंचिद्वा (sc. अश्वेन) VId. 23. स्तोत्रमन्त्रं गत्वा (sc. र-  
श्वेन) Çāk. 8, 9. तदाद्रव्यं सक्तं गतुं प्रवृत्ते VId. 89. गमिष्ये (hingehen)  
यत्र वेदेही R. 5, 36, 29. शो मया सक्तं गतामि Daç. 2, 35. शीघ्रं गच्छामहे  
वयम् *lasst uns schnell aufbrechen* R. 1, 62, 22. गत्वा शीघ्रमाचव्व *gehe  
und melde* Daç. 1, 41, 42. जगमिक्का वने प्रून्ये भार्यामुत्सृज्य N. 10, 29. ग-  
च्छैनामानयेह 13, 24, 22, 1. जगमुर्यागतम् *sie gingen wie sie gekommen  
waren* R. 1, 60, 33. त्रिनितारमपि त्यक्त्वा निःस्वं गच्छति ह्रतः Pāṇāt.  
I, 9. Hit. I, 95. गतवती वा सक्तधर्मचारिणी Çāk. 37, 23. गतुमिच्छति 22,  
14. पुरोतामात् — गच्छामो यत्र गता युधिष्ठिरः MBh. 1, 5746. वयमथैव  
गच्छामो रामं हृष्टम् BHATT. 7, 29. गम्यताम् *man mache sich auf* Pāṇāt.  
45, 1. 100, 10. 232, 10. तदितो गम्यतां तया VId. 163. तदा तु नृपतिर्गता  
wird kommen MBh. 3, 15312. — 2) *verfliessen, vergehen* (von der Zeit):  
काले गच्छति *im Verlauf der Zeit* VId. 61. काव्यशास्त्रविनेदिन कालो  
गच्छति धीमताम् Hit. Pr. 48. दिनेषु गच्छत्सु 20, 14. Ragh. 3, 8. Megh.  
81. सा तस्य शेकेन जगाम रात्रिः R. 2, 73, 45. — 3) *gehen nach, in, zu;  
gelangen nach, zu; sich hineinmachen in; zu Theil werden; a) mit dem  
acc. P. 2, 3, 12. यमं हं युक्तो गच्छति RV. 10, 14, 13. सर्वनमिन्द्रो गच्छति  
1, 16, 8. 5, 87, 9. गृहम् 10, 40, 3. अमुनीतिम् 16, 2. देवान् 1, 163, 13. गिरि-  
म् 10, 133, 1. 16, 3. गच्छामुमरुणं जनेम् AV. 5, 22, 12. दिवंम् 2, 34, 5. अत्रम्  
10, 7, 42. (कृमिः) दत्तो यो मध्यं गच्छति 5, 23, 3. रूतं गच्छसि निष्कृते 3, 9.  
तत्र मे गच्छताद्वयम् 2, 30, 3. उरः RV. 10, 133, 4. तद्यथा मृगाय अतत  
उभौ ग्रामौ गच्छति Kūānd. Up. 8, 6, 2. यथेयं न प्राक्ततः पुरा विद्या ब्राह्म-  
णान्गच्छति 5, 3, 7. अग्र्यं वा गच्छतात् Brh. Ār. Up. 4, 2, 4. — वनं गच्छे-  
त् M. 6, 3. मा गङ्गा मा कुत्रंगमः 8, 92. वनेन वनं गत्वा R. 1, 1, 30. न च  
स्वर्गं स गच्छति M. 3, 18. 4, 235. उत्तमं स्थानम् 2, 249. ब्रह्मणः सन्न शा-  
श्रतम् 244. यज्ञं गच्छेन्न चावृत्तः 4, 57. दमयत्याः स्वयंवरम् । गत्वा N. 6, 3.  
हंसाः समुत्पत्य विदर्शनगमन् 1, 21. गमिष्यामि (sc. रथेन) — एकाङ्का —  
विदर्शनगामी 19, 10. समीपं पुष्करस्य च । गत्वा 7, 4, 14, 20. MBh. 3, 16645.  
Hit. 27, 1. प्रतीपं गम् *Jmd entgegen gehen, sich Jmd (gen.) widersetzen*  
Çāk. 93. गम्यतामेष दक्षिणस्योत्तरे गिरिः R. 4, 63, 22. Hit. 80, 8. उत्त-  
मानुत्तमान्वाङ्क्लीनाङ्कीनांश्च वर्जयन् M. 4, 245. गच्छधम् — राजानम् MBh.  
1, 1789. 6375. R. 1, 34, 5. गच्छधमेन शरणम् MBh. 3, 13006. एते गच्छति  
बहवः पन्थिना दक्षिणापथम् 2317. 2319. P. 4, 3, 85. ज्ञानुभ्यामवनो गम्  
*sich auf die Knie werfen* MBh. 13, 935. Pāṇāt. 236, 9. धरणीं मूर्ध्ना *sich  
mit dem Kopfe bis zur Erde verneigen* R. 3, 11, 6. तामप्येतादृशो भावः  
क्षिप्रमेव गमिष्यति — दातारमिव दक्षिणा Daç. 2, 54. क्क्ष्मना चरितं यच्च  
व्रतं रत्नासि गच्छति M. 4, 199. एनो गच्छति कर्तारम् 8, 19. तत्ते सर्वं शुनो  
गच्छेत् 90. — b) *mit dem loc.:* (यज्ञः) देवेषु गच्छति RV. 1, 1, 4. 18, 8. यः  
पूणाति स हं देवेषु गच्छति 125, 5. यज्ञं नो वक्तुं स्वर्देवेषु गच्छेत् AV. 9, 3,  
17. VS. 13, 55. गोषु RV. 1, 83, 1. गोमति वृजे 8, 46, 9. धर्मणि 3, 38, 2. कृ-  
दि यत्ते ब्रह्मणो भीरुगच्छत् *wenn dein Herz Furcht beschlich* 1, 32, 14. —  
मद्रादिषु गत्वा P. 6, 2, 13, Sch. मम गृहे गत्वा Pāṇāt. 129, 4. VId. 133. Vrt.  
27, 3. असमीपे 9, 7. गच्छेथास्त्वं परा चैत्रीमश्वमेधे नृपस्य नः *kommen zu*  
MBh. 14, 2509. Hierher gehören auch die Verbindungen mit den Ad-  
verbien तत्र (N. 10, 1. VId. 167), क्क्ष्म, अन्यत्र (N. 8, 20) u. s. w. यत्रा रथेन  
गच्छेत् RV. 1, 22, 4. — c) *mit dem dat. P. 2, 3, 12. ततो दैवतवाय जग्मुः*  
MBh. 3, 453. Draup. 9, 24. Ragh. 12, 7. निलयाय 2, 15. उत्पथेन (so ist zu  
lesen) पथे गच्छति P. 2, 3, 12, VArt. 2, Sch. — d) *mit प्रति nach, zu:**

जगाम निषधान्प्रति N. 26, 1. मा गमः पुत्र यमस्य सदनं प्रति Daç. 2, 35. अ-  
कृत्यो प्रति जगिमवान् MBh. 14, 1706. N. 10, 11. *gegen, in feindlicher Ab-*  
*sicht:* यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति AK. 2, 8, 2, 42. — 4) *inire feminam,*  
mit dem acc. P. 2, 3, 12, VArt. 3, Sch. अगमनीयां गत्वा Āçv. Gṛh. 3, 6.  
ब्राह्मणो यद्यगुप्तो तु गच्छेत्तौ वैश्यपाथिवौ M. 8, 376. 9, 58. 11, 171. 175.  
संयोगं पतिर्गत्वा (vgl. 3.) परस्वैव च योषितम् 12, 60. Jāg. 1, 80. 3, 233.  
अपेनो गच्छतो योषाम् 2, 293. — MBh. 1, 3870. 13, 1469. Bhāg. P. 3, 12,  
30. auch ohne obj.: नरशट्कवद्वक्त्रेदश वरान्निरत्नम् Suçr. 2, 133, 9. प-  
शून्गम् *mit Vieh Unzucht treiben* Jāg. 2, 289. — 5) *in einen Zustand,*  
*eine Lage, ein Verhältniss kommen, gerathen; theilhaft werden, erlan-*  
*gen:* जग्मिषाम् RV. 1, 116, 25. दीर्घायुत्वम् Çāk. 14, 12, 5. मारुर्हृष्टम्  
AV. 12, 4, 32. तमोसि 2, 23, 5. आधिपत्यम् 18, 4, 54. अगन्निद्रं श्रवो बृहत्  
RV. 3, 37, 10. गमन् इन्द्रः सध्या वयंश्च 178, 2. जुष्टिं ते गमेयम् Lāj. 3, 6,  
3. यो यज्ञस्य संस्थामगन् Çat. Br. 1, 1, 4, 3. प्रह्वत्वं M. 2, 168. अमरलोका-  
ताम् 5. अयच्छणीयताम् 9, 23. वध्यताम् N. 9, 8. उपहस्यताम् Ragh.  
1, 3. वैज्ञव्यम् N. 23, 21. आनयम् M. 4, 257. 9, 229. उत्कर्षं चापकर्षम्  
10, 42. कुनसंख्याम् 3, 66. नाशम् 8, 17. Hit. I, 39. प्रलयम् Matsjop. 27. त-  
यम् R. 2, 109, 11. दिष्टात्तम् 66, 12. जगाम् 3, 33, 59. विषादम् 68, 5. MBh.  
1, 7677. VId. 134. विस्मयम् Pāṇāt. 192, 2. परितापम् R. 1, 38, 21. क्रो-  
धम् 64, 18. भयम् MBh. 1, 7629. आर्तिम् 7679. निर्वदम् Bhāg. 2, 52. निश्च-  
यम् R. 1, 42, 27. प्रतिष्ठाम् 2, 18. निद्राम् Megh. 110. उमाख्याम् *den Na-*  
*men Umā erhalten* Kumāras. 1, 26. पौरुषम् । लोकवृत्तिप्रकाशेन ज्ञानमा-  
र्गेण गम्यते MBh. 3, 13935. — 6) *manasa gām in Gedanken wohingehen; wahr-*  
*nehmen:* तानिव शरणं देवाङ्गमुर्मनसा तदा N. 5, 33. जगाम मनसा रामम् R.  
2, 82, 8. 3, 30, 27. पटिं तमत्र मनसा जगन्धं VS. 23, 49. (वायुः) साकं गुन्-  
नसा यज्ञम् 27, 31. अपेक्ष्यमत्र मनसा जगन्वाङ्मते गन्धर्वान् RV. 3, 38, 6.  
Mit Ergänzung von मनसा *wahrnehmen, erkennen, errathen:* तामस्वस्थो  
तदाकारो सव्यस्ता जग्मुर्दिज्ञैः (v. l.: जज्ञुः) MBh. 3, 2108. अस्पेदमिति  
संबन्धो कृत्वा दुःखेन गम्यते (v. l. für ज्ञायते) Hit. I, 132. पुरस्ताद्गम्यत  
एव Çāk. Ch. 20, 7. *pass. verstanden werden, gemeint sein:* यत्रार्थो गम्यते  
न च प्रयोगः P. 8, 1, 62, Sch. समुद्रयेन चेज्जातिर्गम्यते 4, 1, 161, Sch. समा-  
सेन निन्दायां गम्यमानायाम् 2, 1, 26, Sch. 3, 2, 10, Sch. शीलं मे स्वम् । अ-  
त्रास्तीति गम्यते H. 242, Sch. — 7) *दोषेण oder दोषतो गम् mit einer  
Beschuldigung auf Jmd (acc.) losgehen, Jmd die Schuld zuschreiben* MBh.  
1, 4322. 7455. R. 4, 21, 3.

partic. गतं 1) adj. a) *gegangen, fortgegangen* RV. 1, 119, 4. पितृन्परा-  
वतो गतान् AV. 18, 4, 41. आश्रमं तमहं प्राप यथाव्यातपथं गतः Daç. 2, 3.  
मुनिं कर्तुं गतः Hit. IV, 12. ततः कदाचिद्वैजाय गतास्ते Brāhman. 1, 2. ऋ-  
तुपर्णो गते N. 21, 26. 3, 40. 9, 16. 17. 11, 4. 24, 10. VId. 119. — b) *hinge-*  
*gangen, abgeschieden:* मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् AV. 8,  
1, 8. न ह्येष स्यास्पति चिरं गत एव नराधमः *jam perit* MBh. 5, 472. —  
c) *vergangen, verflossen:* गता संवत्सरा दश R. 1, 63, 12. कस्मिंश्चित् गते  
काले Sāv. 1, 18. द्वितीयश्चापि मे मासो जलं भनयतो गतः Arā. 3, 16. M. 8,  
402. R. 2, 89, 2. Çāk. 100. 131. VId. 140. AK. 3, 5, 22. — d) *verschwun-*  
*den, gewichen:* गते ऽनिले AK. 3, 2, 45. sehr häufig am Anf. eines adj.  
comp.: गतक्लाम M. 7, 225. N. 11, 1. गतेन्द्रिय MBh. 3, 15033. चेतन N.  
9, 20. 10, 19. चेतस् 8, 1. संकल्प 4, 28. सन्न 16, 26. सौहृद् 19, 6.  
ञ्वर 20, 32. संज्ञ Indr. 3, 21. व्यय 1, 23. Sund. 4, 1. R. 1, 56, 21. Suçr. 1, 17,